B.A. Part-1 (Hons)
Philosophy - Paper → 1
(Indian Philosophy)

Q. वैशेषिक दर्शन के अभाव का वर्णन करें ? संक्षिप्त रूप में?

Ans वैशेषिक दर्शन के प्रणेता के रूप में महर्षि कणाद को जाना जाता है। वह रेवतं से अन्न चुनकर खाते थे, इस विना पर उनका नाम कणाद पड़ा। अभाव वैशेषिक दर्शन का सातवाँ पदार्थ है। पदार्थ को दो भागों में बाँटा जाता है - भाव (Being) और अभाव (Non-Being) भाव वह है जो अभाव नहीं और अभाव वह है जो भाव नहीं। अतः भाव और अभाव दोनों विरोधी हैं। इसलिए अभाव को भाव का प्रतियोगी और भाव को अनुयोगी कहा जाता है। अभाव एक स्वतंत्र पदार्थ है। इसकी परिभाषा इस तरह दी जासकती है कि "जिस पदार्थ का ज्ञान उसके विरोधी पदार्थ के ज्ञान के बिना संभव नहीं है, वह अभाव पदार्थ है, या अनुयोगी में प्रतियोगी के अनुपस्थिति अभाव है। जैसे - चाय में चीनी नहीं है, चाय अनुयोगी है, जिसका प्रतियोगी (भाव) चीनी का अभाव है। अतः भाव और अभाव की सत्ता हमेशा साथ साथ रहती है। अभाव का अपना एक अस्तित्व है एक ज्ञान है। वह ज्ञान का विषय है क्योंकि अभाव का प्रत्यक्ष किया जाता है। अभाव के दो भेद हैं ① संसर्गाभाव और ② अन्योन्याभाव

① संसर्गाभाव :- जब दो वस्तुओं में सम्पर्क या संसर्ग का अभाव है, उसे संसर्गाभाव कहते हैं। जैसे कारण (Cause) में कार्य (Work) का अभाव होना। मिट्टी से घड़ा का बनना। जब तक मिट्टी से घड़ा नहीं बन जाता, उसमें घड़ा का अभाव रहता है। संसर्गाभाव के भी चार प्रकार हैं। ⓐ प्रागभाव :- प्राक (पहले) और अभाव इन दो शब्दों के मिल प्रागभाव बना है। यह जो अभाव पहले रहता है, बाद में समाप्त हो जाता है जैसे जबतक घड़ा नहीं बनता है, तबतक मिट्टी में

घड़ा का अभाव है। (ii) ध्वंसाभाव :- इसका अर्थ है नाश या नष्ट। किसी कार्य का विनाश होने पर जो अभाव उत्पन्न होता है, वह ध्वंसाभाव कहलाता है। इसका अन्त कभी नहीं होता, ये अभाव की शुरुआत है। अगर घड़ा टूटता है फिर वह घड़ा नहीं बन पाता, दूसरा मिट्टी ही बन जाये।

(iii) अत्यन्ताभाव :- जब दो वस्तुओं का सम्पर्क तीनों काल (वर्तमान, भूत, एवं भविष्य) में नहीं होता, उसे अत्यन्ताभाव कहते हैं। इस अभाव की न उत्पत्ति होती न विनाश। जैसे :- वायु में रूप का अभाव। यह अभाव तीनों कालों में है। (iv) सामयिक अभाव वह है जो किसी समय में उत्पन्न होता, न ही किसी समय में नष्ट होता है। ये अभाव हमेशा बना रहता है यह एक क्षण में उत्पन्न होता है, दूसरे क्षण में नष्ट हो जाता है। जैसे :- दिहाड़ी की हालत। जब कोई मनुष्य बेहोश तो उसमें चेतना का अभाव होता, लेकिन होश आने पर चेतना के अभाव का अन्त हो जाता है।

(v) अन्योन्याभाव :- अन्य अन्य का अभाव यानी एक में दूसरे का नहीं होना। जब एक वस्तु दूसरी वस्तु से पूरी तरह भिन्न हो, एक वस्तु में दूसरे का अभाव होना, अन्योन्याभाव कहलाता है। जैसे घड़ा कपड़ा नहीं है। दोनों बिलकुल अलग हैं, इनकी भिन्नता का भाव समाप्त नहीं होता और न ही यह बताया जा सकता है, यह भिन्नता कब उत्पन्न हुई है।

अतः हमें ज्ञात है कि अभाव दैनिक जीवन के व्यवहार और मोक्ष प्राप्ती के मार्ग में बहुत महत्व रखता है। दुःखों का अभाव मोक्ष है। अभाव पदार्थ के बिना मोक्ष की कल्पना नहीं की जा सकती। दैनिक व्यवहार में भी हम अपने व्यवहार में बुराई का अभाव है, और उसे अपना लेते हैं। हमारे दैनिक व्यवहार में अभाव का बहुत महत्व है। इसके अभाव बिना कार्य करना कठिन है।

Scanned with CamScanner